बच्चों को भी प्रभावित करता है
किडनी रोग

हम अपने शरीर की बाहरी सफाई का ध्यान तो रख लेते हैं, लेकिन शरीर के भीतर की सफाई का काम हमारी किडनी (गुर्दा) संभालती है। यह हमारे शरीर की विषाक्तता और अनावश्यक कचरे को बाहर निकालकर हमें स्वस्थ रखती है। हालांकि हमारे शरीर में दो किडनी होती हैं लेकिन केवल एक किडनी ही सारी जिंदगी सभी महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करने में अकेले ही सक्षम होती है। हाल के वर्षों में डायबिटीज और हाई ब्लडप्रेशर के मरीजों की संख्या में तेजी से हो रही वृद्धि भविष्य में किडनी रोगियों की संख्या में तेजी से होने वाली वृद्धि को दर्शाता है। यही वजह है कि दुनिया भर के सैकड़ों लोगों जिनमें बच्चे भी शामिल हैं, को प्रभावित करने वाले किडनी रोग के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से हर साल मार्च के दूसरे बृहस्पतिवार को 'वर्ल्ड किडनी डे' मनाया जाता है। इस साल 10 मार्च को वर्ल्ड किडनी डे मनाया जाएगा। लोगों में किडनी की बीमारियों की समझ, रोकथाम और जल्द उपचार शुरू करने के लिए जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। प्रतिवर्ष यह किसी थीम पर आधारित होता है। इस वर्ष की थीम है 'बच्चों में किडनी रोग : बचाव के लिए जल्द प्रतिक्रिया करें!' किडनी रोग बच्चों को कई रूपों में प्रभावित करता है जिसमें इलाज किये जाने वाले विकारों के साथ ही जीवन के लिए खतरा बनने वाले लंबे समय के परिणाम शामिल हैं।

World Kidney Day
10 मार्च

बच्चों में होने वाले मुख्य किडनी रोग-

नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम

यह किडनी की एक आम बीमारी है। पेशाब में प्रोटीन का जाना, रक्त में प्रोटीन की मात्रा में कमी, कोलेस्ट्रॉल का उच्च स्तर और शरीर में सूजन इस बीमारी के लक्षण हैं। इस रोग की वजह से किसी भी उम्र में शरीर में सूजन हो सकती है, मुख्यतः यह रोग बच्चों में देखा जाता है। उचित उपचार से रोग पर नियंत्रण होना और बाद में पुनः सूजन दिखाई देना, यह सिलसिला सालों तक चलते रहना नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम की विशेषता है। लंबे समय तक बार-बार सूजन होने की वजह से यह रोग मरीज और उसके पारिवारिक सदस्यों के लिए एक चिंताजनक रोग है। नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम में किडनी के छन्नी जैसे छेद बड़े हो जाने के कारण अतिरिक्त पानी और उत्सर्जी पदार्थों के साथ-साथ शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन भी पेशाब के साथ निकल जाता है, जिससे शरीर में प्रोटीन की मात्रा कम हो जाती है और शरीर में सूजन आने लगती है। माना जाता है कि श्वेतकणों में लिम्फोसाइट्स की गड़बड़ी के कारण यह रोग होता है। इस बीमारी के 90 प्रतिशत मरीज बच्चे होते हैं जिनमें नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम का कोई निश्चित कारण नहीं मिल पाता है। इसे प्राथमिक या इडीओपैथिक नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम भी कहते हैं।

वीयूआर

कई बार बड़े बच्चे भी बिस्तर खराब कर देते हैं। ऐसे में उन्हें वेसिको यूरेटेरिक रिफ्लक्स या वीयूआर की आशंका हो सकती है। यह वह रोग है, जिसमें (वाइल यूरिनेटिंग) यूरिन वापस किडनी में आ जाती है। वीयूआर में शिशु बार-बार मूत्र संक्रमण (यूटीआई) का शिकार होता है और इसके कारण उसे बुखार आता है। आमतौर पर फिजिशियन बुखार कम करने के लिए एंटीबायोटिक देते हैं लेकिन वीयूआर धीरे-धीरे अंग को डैमेज करता रहता है। वीयूआर नवजात शिशुओं और छोटे बच्चों की आम समस्या है, लेकिन इससे बड़े बच्चे और वयस्क भी प्रभावित हो सकते हैं। सौ नवजात शिशुओं में से एक या दो शिशु वीयूआर से प्रभावित होते हैं। अध्ययन बताते हैं कि वीयूआर से प्रभावित बच्चे के भाई या बहन में से 32 प्रतिशत में यह समस्या देखी गई हैं। वीयूआर एक आनुवांशिक रोग है। अगर शुरुआती दौर में वीयूआर का इलाज किया जाए तो आसानी से ठीक किया जा सकता है, लेकिन बाद की स्टेज में यह किडनी फेलियर और ट्रांसप्लांट का मुख्य कारण बनता है।

यूटीआई

बच्चों में यूटीआई को डायग्नोज करना कठिन होता है। उपचार न कराया जाए तो उम्र बढ़ने के साथ लक्षण भी बढ़ने लगते हैं जैसे नीद में बिस्तर गीला करना, उच्च रक्तचाप, यूरिन में प्रोटीन आना, किडनी फेलियर। लड़कियों में इसके होने की आशंका लड़कों से दोगुनी होती है। अगर यूटीआई का उपचार नहीं कराया जाए तो किडनी के ऊतकों को स्थायी नुकसान पहुंचता है, जिसे रिफ्लक्स नेफ्रोपैथी कहा जाता है। जब यूरिन का बहाव उल्टा होता है तो किडनी पर सामान्य से अधिक दबाव पड़ता है। अगर किडनी संक्रमित हो जाती है तो समय के साथ ऊतकों के क्षतिग्रस्त होने की आशंका बढ़ जाती है। इससे उच्च रक्तचाप और किडनी फेलियर होने का खतरा अधिक हो जाता है।

लक्षण

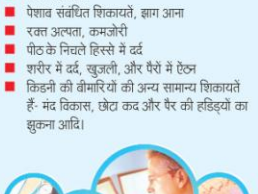

- चेहरे में सूजन
- भूख में कमी मितली, उल्टी
- उच्च रक्तचाप
- पेशाब संबंधित शिकायतें, झाग आना
- रक्त अल्पता, कमजोरी
- पीठ के निचले हिस्से में दर्द
- शरीर में दर्द, खुजली, और पैरों में ऐंठन
- किडनी की बीमारियों की अन्य सामान्य शिकायतें हैं- मंद विकास, छोटा कद और पैर की हड्डियों का झुकना आदि।

क्रोनिक किडनी डिजीज

इसके अंतर्गत शिशु में वर्ष डिफेक्ट (शिशु केवल एक किडनी के साथ या किडनी की असामान्य संरचना के साथ पैदा हो), आनुवांशिक रोग (जैसे पोलिसिस्टिक किडनी डिजीज), इंफेक्शन, नेफ्रोटिक सिंड्रोम (ऐसे लक्षणों का समूह जिसमें यूरिन में प्रोटीन और पानी कम होना और शरीर में नमक प्रतिधारणा जो किडनी डैमेज का संकेत दे), सिस्टेमिक डिजीज (जिसमें किडनी के साथ ही शरीर के कई अंग शामिल हों जैसे फेफेड़े), यूरिन ब्लॉकेज आदि शामिल हैं। जन्म से लेकर चार वर्ष तक वर्ष डिफेक्ट और आनुवांशिक रोग किडनी फेलियर का कारण बनते हैं। पांच से चौदह वर्ष की उम्र तक किडनी फेलियर का मुख्य कारण आनुवांशिक रोग, नेफ्रोटिक सिंड्रोम और सिस्टेमिक डिजीज बनता हैं।

■ डॉ. सुनील प्रकाश,(डायरेक्टर नेफ्रोलॉजी और रेनल ट्रांसप्लांट सर्जरी, बीएलके सुपर स्पेशलिटी हॉस्पीटल, नई दिल्ली)